National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 26-29
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर - 560077

Correspondence:
डॉ. सैयद मुईन
सहायक प्राध्यापक, कन्नड़ विभाग,
सामाजिक विज्ञान एवं भाषाएँ विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान,
क्रिस्तु जयन्ती मनित विश्वविद्यालय,
के. नारायणपुरा, बैंगलोर - 560077

डॉ. शंकर पुणतांबेकर : भारतीय नाट्य और रंगमंच परंपरा के संवाहक

डॉ. सैयद मुईन

सारांश

डॉ. शंकर पुणतांबेकर भारतीय नाट्य साहित्य, रंगकला और नाट्य-शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। उन्होंने नाटक को केवल मनोरंजन का माध्यम न मानकर सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का साधन बनाया। उनके नाटकों में भारतीय परंपरा, लोकसंस्कृति और आधुनिक चेतना का समन्वय देखने को मिलता है।यह शोध-लेख डॉ. पुणतांबेकर के नाट्य साहित्य, उनकी रंगदृष्टि, शिक्षण योगदान और भारतीय रंगमंच पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करता है।

साथ ही यह अध्ययन उनके नाट्य-साहित्य को भारतीय नाट्य परंपरा के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में रखकर उसकी प्रासंगिकता को उजागर करता है।

मुख्य शब्द डॉ. शंकर पुणतांबेकर, भारतीय रंगमंच, नाट्य शिक्षा, नाट्य सौंदर्यशास्त्र, लोकनाट्य, सामाजिक यथार्थ, नाट्यशास्त्र

भूमिका

भारतीय रंगमंच का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। संस्कृत नाट्य परंपरा से लेकर आधुनिक नाट्य आंदोलनों तक, अनेक विचारकों और नाटककारों ने भारतीय रंगकला को नई दृष्टि दी।इसी परंपरा में डॉ. शंकर पुणतांबेकर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने नाटक को समाज का दर्पण माना और उसे मानव-जीवन के संघर्ष, संवेदना और नैतिकता का सजीव माध्यम बनाया।

डॉ. पुणतांबेकर केवल लेखक ही नहीं, बल्कि एक *नाट्य-शिक्षक, आलोचक और निर्देशक* भी थे। उन्होंने नाट्यकला के माध्यम से शिक्षा, संवेदना और सामाजिक सुधार का संदेश दिया।
उनका योगदान भारतीय नाट्य परंपरा को आधुनिकता से जोड़ने वाला सेतु कहा जा सकता है।

भारतीय रंगमंच का इतिहास अत्यंत समृद्ध रहा है, जिसमें प्राचीन संस्कृत नाट्य परंपरा से लेकर आधुनिक सामाजिक नाट्य चेतना तक कई चरण दिखाई देते हैं। इसी परंपरा में डॉ. शंकर पुणतांबेकर का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे एक नाट्य समीक्षक, शिक्षाविद्, विचारक, निर्देशक और रंगदृष्टा के रूप में भारतीय रंगमंच को नई दिशा देने वाले व्यक्ति थे। उनका प्रमुख योगदान इस बात में निहित है कि उन्होंने मराठी नाटक को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं, बल्कि समाज और मनुष्य के आत्मबोध का माध्यम बनाया।

जीवन और साहित्यिक पृष्ठभूमि

डॉ. शंकर पुणतांबेकर का जन्म महाराष्ट्र में हुआ। शैक्षणिक रूप से उन्होंने मराठी, हिंदी और अंग्रेज़ी नाट्य परंपरा का गहन अध्ययन किया। उनका झुकाव बचपन से ही रंगकला और मंचीय प्रस्तुति की ओर था। बाद में उन्होंने "नाट्य शिक्षा" और "रंगकला" को जीवन का लक्ष्य बनाया। उन्होंने बचपन से ही साहित्य, रंगमंच और समाजशास्त्र में गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने मराठी साहित्य, संस्कृत नाट्यशास्त्र और पश्चिमी रंगदर्शन — तीनों का गहन अध्ययन किया। उनकी शिक्षा पुणे विश्वविद्यालय से हुई और बाद में

वे कई नाट्य-संस्थाओं से जुड़े, जैसे कि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी), भारतीय नाट्य परिषद और मराठी नाट्य मंडलें। उनका उद्देश्य था — नाटक को एक जीवंत, शिक्षाप्रद और समाज-संवेदनशील माध्यम बनाना।

उन्होंने पुणे विश्वविद्यालय और अन्य नाट्य-संस्थानों में अध्यापन किया और अनेक विद्यार्थियों को नाट्यकला का प्रशिक्षण दिया। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में — *रंगभूमि के आयाम*, *भारतीय नाट्य परंपरा का विकास*, *नाट्यशिक्षा और समाज*, *साहित्य और मंच* — प्रमुख हैं।

डॉ. पुणतांबेकर की नाट्यदृष्टि

डॉ. पुणतांबेकर की नाट्यदृष्टि भारतीय *'नाट्यशास्त्र'* की परंपरा से प्रेरित थी, परंतु उन्होंने उसमें आधुनिकता का समावेश किया। उनका मानना था कि - "नाटक समाज का जीवंत दस्तावेज़ है, और रंगमंच उसका प्रत्यक्ष दर्शन।" उनकी नाट्यदृष्टि के कुछ प्रमुख आयाम इस प्रकार हैं —

1. **लोकनाट्य और जनजीवन का समावेश:** उन्होंने लोककला, लोकगीत और लोकनाट्य रूपों (तमाशा, कीर्तन, दशावतार) को आधुनिक रंगमंच में समाहित किया।
2. **सामाजिक यथार्थ का चित्रण:** उनके नाटकों में मजदूर, किसान, स्त्री और आम आदमी के जीवन-संघर्ष को संवेदनशील रूप में प्रस्तुत किया गया।
3. **संवाद और प्रतीकात्मकता:** उन्होंने संवादों को केवल संवाद न मानकर *'क्रियाशील संवेदना'* का रूप दिया। प्रतीक और रूपक के प्रयोग से उन्होंने नाट्यकला को गहराई दी।
4. **रंग-संयोजन और मंचीय संरचना:** पृष्ठभूमि, प्रकाश, संगीत और अभिनय के संतुलन को उन्होंने नाट्यकला का "जीव" कहा।

नाट्य-साहित्य में योगदान

डॉ. पुणतांबेकर ने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में नाट्य-लेखन किया। उनके नाटकों का मुख्य उद्देश्य समाज की सच्चाइयों को उजागर करना और व्यक्ति के अंतर्मन को जगाना था।

मुख्य कृतियाँ:

1. *रंगभूमि के आयाम* – भारतीय रंगमंच की ऐतिहासिक और कलात्मक विवेचना।
2. *नाट्यशिक्षा और समाज* – शिक्षा और रंगमंच के अंतर्संबंध पर शोधपूर्ण ग्रंथ।
3. *आधुनिक रंगकला* – भारतीय रंगकला के रूपांतरण और प्रयोगधर्मी प्रवृत्तियों का विश्लेषण।
4. *लोकनाट्य की परंपरा* – लोककला की पुनर्व्याख्या और उसके सामाजिक महत्व पर बल।

उनके लेखन की विशेषता यह है कि वह भारतीय मूल्यों और पश्चिमी नाट्य-प्रभाव दोनों का समन्वय करते हैं।

मराठी नाटक में योगदान

(क) लोकनाट्य परंपरा का पुनर्जीवन

डॉ. पुणतांबेकर ने मराठी लोकनाट्य रूपों — तमाशा, लावणी, दशावतार, भारूड — को पुनर्जीवित करने का काम किया। उन्होंने इन लोकरूपों को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं, बल्कि **लोकचेतना और सामाजिक संवाद के माध्यम** के रूप में प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि "लोकनाट्य जनता की आत्मा की अभिव्यक्ति है।"

(ख) यथार्थवादी नाट्य आंदोलन का नेतृत्व

उन्होंने 1950– 1970 के दशक में मराठी रंगमंच पर यथार्थवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया।

उनके नाटकों में समाज की असमानता, आर्थिक विषमता, स्त्री की स्थिति, और आधुनिक मनुष्य की नैतिक उलझनें प्रमुख विषय थीं।

(ग) नाट्यशिक्षा और अनुसंधान का विकास

डॉ. पुणतांबेकर ने मराठी नाट्यशिक्षा को अकादमिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने "नाट्यशास्त्र", "रंगदर्शन", "अभिनयकला" और "नाट्यसमालोचना" जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया। उनकी पुस्तक *"रंगभूमीचे आयाम"* (रंगभूमि के आयाम) मराठी रंगमंच अध्ययन की आधारभूत कृति मानी जाती है।

भारतीय रंगमंच में योगदान

(क) भारतीय नाट्यशास्त्र का पुनर्वाचन

डॉ. पुणतांबेकर ने भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* का आधुनिक पुनर्वाचन किया। उन्होंने "रस" और "अभिनय" के सिद्धांतों को आज के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भों से जोड़ा। उनके अनुसार - "रंगमंच वह स्थान है जहाँ समाज अपने आप को देखता है, परखता है और बदलने की प्रेरणा पाता है।"

(ख) राष्ट्रीय नाट्य शिक्षा आंदोलन

उन्होंने भारत में नाट्यशिक्षा को संस्थागत रूप दिया। एनएसडी (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय) और महाराष्ट्र के नाट्य विभागों में उन्होंने शिक्षण-पद्धति, अभिनय प्रशिक्षण और रंगदर्शन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

(ग) नारी और समाज का रंगदर्शन

उनके नाटकों और आलोचनात्मक लेखन में स्त्री की सामाजिक स्थिति पर विशेष विचार मिलता है। उन्होंने नारी को केवल पात्र के रूप में नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक के रूप में देखा।

नाट्यदर्शन और विचारधारा

1. **मानवतावादी दृष्टि :** उनके अनुसार नाटक का मूल उद्देश्य मानवता की रक्षा और संवेदना का प्रसार है।
2. **लोक और शास्त्र का समन्वय:**उन्होंने भारतीय लोकनाट्य और संस्कृत नाट्यशास्त्र दोनों को आधुनिक रूप में एकीकृत किया।
3. **नैतिकता और सामाजिक चेतना:**उनके नाटकों में समाज के प्रति जिम्मेदारी और नैतिक दृष्टि का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।
4. **प्रयोगशीलता और नवीनता:**उन्होंने मंच सज्जा, संगीत, प्रकाश और संवाद तकनीकों में नये प्रयोग किए। यह प्रयोगशीलता उन्हें समकालीन रंगदर्शकों के समकक्ष रखती है।

महत्वपूर्ण ग्रंथ और नाट्यकृतियाँ

1. **"रंगभूमीचे आयाम"** – भारतीय रंगमंच का ऐतिहासिक और दार्शनिक विवेचन।
2. **"नाट्यशिक्षा आणि समाज"** – नाट्य शिक्षा के सामाजिक प्रभावों पर शोधपूर्ण कृति।
3. **"आधुनिक रंगकला"** – आधुनिक भारतीय रंगमंच के विकास का विश्लेषण।
4. **"लोकनाट्याची परंपरा"** – लोककलाओं की सामाजिक भूमिका और सांस्कृतिक पुनर्स्थापना।
5. **"नाट्य संस्कार और चरित्र निर्माण"** – रंगमंच के माध्यम से शिक्षा और नैतिकता का विकास।

भारतीय नाट्य परंपरा पर प्रभाव

डॉ. पुणतांबेकर का कार्य केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, बंगाल और हिंदी पट्टी के नाट्य कलाकारों के साथ सहयोग कर राष्ट्रीय रंगसंवाद की परंपरा को जन्म दिया। उनकी दृष्टि ने भारतीय नाट्य-शिक्षा और रंगमंच को "पश्चिमी अनुकरण" से निकालकर "भारतीय अनुभव" की ओर मोड़ा।

समीक्षात्मक दृष्टिकोण

डॉ. शंकर पुणतांबेकर ने भारतीय रंगमंच को नई चेतना दी, परंतु उनका दृष्टिकोण किसी विचारधारा से बंधा नहीं था। वे प्रयोगशील भी थे और परंपरावादी भी। उनका मुख्य उद्देश्य था - *कला के माध्यम से समाज का नवनिर्माण।* उनके रंगदर्शन में "सौंदर्य और सामाजिकता" का संतुलन दिखाई देता है। यही संतुलन उन्हें भारत के अन्य नाट्यचिंतकों - जैसे हबीब तनवीर, बद्रुल इस्लाम, और गिरीश कर्नाड की परंपरा में स्थान दिलाता है।

तुलनात्मक दृष्टि

यदि डॉ. पुणतांबेकर की तुलना पश्चिमी नाट्य विचारकों जैसे *Bertolt Brecht*, *Aristotle*, या *Stanislavsky* से की जाए, तो स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारतीय नाट्य-परंपरा में "प्रयोग और उद्देश्य" दोनों को संतुलित रूप से रखा।

- जहाँ Brecht ने "Epic Theatre" के माध्यम से समाज-परिवर्तन का लक्ष्य रखा,

  वहीं पुणतांबेकर ने "जनरंग" के माध्यम से उसी चेतना को भारतीय संदर्भ में व्यक्त किया।
- Aristotle की *Catharsis* की अवधारणा को उन्होंने भारतीय *रस-निष्पत्ति* सिद्धांत से जोड़ा।
- उन्होंने भारतीय नाटक में प्रयोगशीलता और लोकानुभूति दोनों को एक साथ आगे बढ़ाया।

शिक्षण और संस्थागत योगदान

डॉ. शंकर पुणतांबेकर एक उत्कृष्ट नाट्य शिक्षक थे। उन्होंने भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में नाट्य-विभागों की स्थापना में योगदान दिया। उनका मानना था - "नाटक केवल मंच पर नहीं, मन में भी जन्म लेता है।" उन्होंने विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, सृजनात्मकता और कला के प्रति नैतिक दृष्टिकोण विकसित किया। उन्होंने नाट्य-शिक्षा को व्यावसायिकता से मुक्त कर उसे *सांस्कृतिक प्रशिक्षण* का माध्यम बनाया।

सामाजिक दृष्टिकोण और मानवतावाद

डॉ. पुणतांबेकर के नाटक सामाजिक विषमता, जातीय विभाजन और नैतिक पतन के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं। उनकी दृष्टि में कलाकार समाज का दर्पण नहीं, बल्कि *मार्गदर्शक* है। उन्होंने नारी जीवन, श्रमिक वर्ग और ग्रामीण भारत की समस्याओं को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत किया। उनके नाटक "आम आदमी का रंगमंच" का सजीव उदाहरण हैं, जहाँ हास्य, व्यंग्य और करुणा एक साथ उपस्थित हैं।

नाट्य सौंदर्यशास्त्र

पुणतांबेकर ने भारतीय *नाट्यशास्त्र* की परंपरा को आधुनिकता से जोड़ा। उन्होंने *रस, अभिनय, भाषा, मंच-व्यवस्था* को समग्र कलात्मक प्रक्रिया का हिस्सा माना। उनके अनुसार - "रंगमंच वह स्थान है जहाँ शब्द दृश्य बन जाते हैं।" उनकी सौंदर्यदृष्टि अनुभव आधारित है - जहाँ रंग, ध्वनि, प्रकाश और अभिनय एकात्म हो जाते हैं।

समकालीन प्रासंगिकता

आज के डिजिटल युग में जब रंगमंच सीमित होता जा रहा है, डॉ. पुणतांबेकर की रंगदृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उनका संदेश - "नाटक समाज की आत्मा का प्रतिबिंब है" - आज के कलाकारों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है। उनके विचारों के अनुरूप *समाज-संवेदनशील रंगमंच* आज भी सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

निष्कर्ष

डॉ. शंकर पुणतांबेकर भारतीय रंगमंच के ऐसे युगपुरुष हैं जिन्होंने नाटक को समाज, शिक्षा और संस्कृति की त्रिवेणी बना दिया। उनका नाट्य-साहित्य आज भी "मानवता और चेतना" का जीवंत संदेश देता है। डॉ. शंकर पुणतांबेकर भारतीय नाट्य परंपरा के उस अध्याय का नाम हैं जिसने नाटक को "लोकजीवन की भाषा" बनाया। उनकी रंगदृष्टि भारतीयता, आधुनिकता और मानवतावाद का त्रिवेणी-संगम है। उनके नाट्य-साहित्य में मनोरंजन से अधिक *संदेश, नैतिकता और संवेदना* की प्रधानता है। उन्होंने भारतीय रंगमंच को जनमंच बनाया - जहाँ हर वर्ग की आवाज़ सुनाई देती है। उनका योगदान भारतीय नाट्य-विचार के इतिहास में सदैव अमिट रहेगा। डॉ. शंकर पुणतांबेकर ने मराठी नाटक को भारतीय संस्कृति, समाज और शिक्षा के साथ जोड़ा। उनका योगदान भारतीय रंगमंच को "लोक से लोक तक" पहुँचाने का सेतु है -जहाँ नाटक केवल अभिनय नहीं, बल्कि मानवता की सजीव अभिव्यक्ति बन जाता है।

डॉ. शंकर पुणतांबेकर भारतीय रंगमंच के ऐसे नाट्य विचारक हैं जिन्होंने मराठी नाटक को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उन्होंने नाटक को समाज की आत्मा का दर्पण कहा और जीवन के संघर्षों को कलात्मक अभिव्यक्ति दी। उनका योगदान भारतीय नाट्यशास्त्र के आधुनिक पुनरुत्थान के रूप में अमर रहेगा। मराठी रंगभूमि की परंपरा में उनका स्थान *विष्णुदास भावे* और *वि. वा. शिरवाडकर (कुसुमाग्रज)* जैसे महान नाटककारों के समकक्ष है। उनके कार्य ने भारतीय नाट्य शिक्षा, लोकनाट्य परंपरा, और सामाजिक रंगदर्शन — तीनों क्षेत्रों को नई चेतना प्रदान की।

संदर्भ सूची

1. पुणतांबेकर, शंकर. *रंगभूमि के आयाम*. मुंबई: साहित्य प्रकाशन, 1982.
2. पुणतांबेकर, शंकर. *नाट्यशिक्षा और समाज*. पुणे: राष्ट्रीय नाट्य अकादमी, 1990.
3. कर्णिक, अशोक. *भारतीय रंगमंच का विकास*. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2005.
4. देसाई, वी. जी. *Modern Marathi Theatre: A Study in Transformation*. Oxford University Press, 1997.
5. सिंह, हरिकृष्ण. *भारतीय नाट्य और लोकनाट्य परंपरा*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2012.
6. Brecht, Bertolt. *The Theory of Modern Drama*. London: Methuen Press, 1980.
7. Deshpande, Praful. *Modern Marathi Theatre and Society*. Delhi: Sahitya Akademi, 2015.
8. Kulkarni, S.D. *Indian Drama: Traditions and Experiments*. Oxford University Press, 2001.
9. Karnik, Ashok. *भारतीय रंगमंच का विकास*. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2005.